इतिहास

(वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-2

DTVF OPT-23 **H-2302**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Ravi Gangwar **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:**

Center & Date: Mukherjee Nagar, 23.07.2023 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0806397

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1	3.5	3.5	4.5	6	6	23.5	5	4	4	3	5	4.5	20.5
2		—	—		—	—	6	—	—	—	—		
3		—	—		—	—	7	11	8	7.5	—	—	26.5
4	10	6.5	8			24.5	8	10		7	—	—	17
						सकल योग (Grand Total)			111.5				

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

→ विषयवस्तु की अवधारणात्मक समझ ठीक है।

→ परिचय दक्षता को और प्रभावी बनाएं।

→ प्रस्तुति अच्छी है।

-> भाषा प्रवाह में सुधार अपेक्षित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क / SECTION - A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) 9वीं शताब्दी में श्रेणियों ने अपना महत्त्व खो दिया। विश्लेषण कीजिये।

Guilds lost their significance in the 9th century. Analyse.

श्रेणियाँ मौर्य काल से लेकर गुप्तोत्तर काल तक भारतीय आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहीं।

श्रेणियाँ वस्तुतः व्यापारिक कार्यों के साथ-साथ सदस्यों के बीच न्यायिक कार्य, सामाजिक सहायता जैसे शिक्षा, प्रशिक्षण, वृत्य, मनोरंजन आदि की भी व्यवस्था करती थी।

9वीं शताब्दी भारत के सन्दर्भ में राजनीतिक विखण्डनीकरण का काल था। उत्तर भारत में विभिन्न छोटे-2 राज्य जैसे - पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट, उड़ीसा के गंग आदि की अवस्थिति थी, जिससे आर्थिक व्यापारिक गतिविधियों का उच्च

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्तर नहीं रहा तो, सामंतवाद के विकास की वजह से बंद सामाजिक-आर्थिक अर्थव्यवस्था का निर्माण हुआ। फलतः समाज में श्रेणियों का महत्व कम हुआ।

किन्तु दक्षिण भारत में एक समृद्ध चोलकाल के अन्तर्गत इन श्रेणियों ने उन्नति करना जारी रखा। वस्तुतः वहाँ मणिग्रामम, नानादेशी आदि श्रेणियों की उपस्थिति से इस बात को समझा जा सकता है।

इस प्रकार यह कहना कि 9 वीं शताब्दी में श्रेणियों के पतन की कहानी सम्पूर्ण भारत में एकरूपता से युक्त थी, गलत होगा। वस्तुतः यह तो दक्षिण भारत में अपने चरम की ओर अग्रसर हो रही थी।

श्रेणियों के पतन के कारणों को बताएं.
→ रोमन साम्राज्य का पतन
→ अनेक स्थानीय आर्थिक प्रशासनिक इकाइयों का गठन करें।

3.5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) प्रारंभिक मध्यकालीन दक्षिण भारत में नगरीय क्षरण के लिये भारतीय साहित्यिक साक्ष्य मज़बूत नहीं हैं। टिप्पणी कीजिये।
Indian literary evidence for urban decay is not strong in Early Medieval South India. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक मध्यकालीन दक्षिण भारत की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति को चोल साम्राज्य, राष्ट्रकूट, पल्लव राज्यों आदि की उपस्थिति से समझा जा सकता है।

मध्यकाल की शुरुआत में उत्तर भारत में राजनीतिक विखण्डनीकरण, बाहरी आक्रमण (महमूद गजनी, मुहम्मद बिन कासिम आदि) व्यापार-वाणिज्य की गिरावट से नगरीकरण का पतन हुआ।

हालांकि दक्षिण भारत में प्रारम्भिक मध्यकालीन राजनीतिक व्यवस्था काफी सुदृढ़ थी। जिसमें चोल साम्राज्य की उपस्थिति की वजह से व्यापार-वाणिज्य उन्नत अवस्था में था। फलतः गंगैकोण्ड चोलपुरम जैसे नवीन नगरों का भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

विकास हुआ। किन्तु यह प्रक्रिया सम्पूर्ण दक्षिण भारत के क्रम में तथा पूर्व चोलकाल तथा चोलकाल से बाहर के क्षेत्रों के सन्दर्भ में ठीक नहीं थी। वस्तुतः बार-बार युद्धों, आर्थिक क्षेत्र में सामंतवाद के आने से नगरों का अवसान हुआ। किन्तु इस समय के साहित्यिक स्त्रोतों में ज्यादातर चोल कालीन विजयों का उल्लेख मिलता है। जिस कारण सम्पूर्ण दक्षिण भारत की नगरीय स्थिति पर प्रकाश नहीं पड़ पाता है।

अतः कहा जा सकता है कि प्रारम्भिक दक्षिण भारतीय मध्यकालीन नगरीय स्थिति जर्जर अवस्था में थी किन्तु चोल -कालीन गतिविधियों ने इसमें नई ऊर्जा, विशेषताओं को भी भरा।

टंकों के द्वारा नगरीय ह्रास के अवशेषों का उल्लेख करें

3.5/10

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में जाति संस्था में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। विस्तार कीजिये।
The Institution of caste underwent significant changes in early medieval India. Elaborate.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक मध्यकालीन भारत सामंती व्यवस्था तथा विभिन्न बाहरी आक्रमणों से युक्त था, जिस वजह से भारतीय सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

परिवर्तन :-

i) महमूद गजनवी (17 बार आक्रमण), मुहम्मद बिन कासिम आदि द्वारा आक्रमण करने से भारत में इस्लाम का प्रसार हुआ तथा इसकी समतावादी भावना की वजह से निचली जातियों ने इस्लाम को बड़ी मात्रा में अपनाया।

ii) विदेशी शासकों के आक्रमण तथा इनकी संस्कृति के आत्मसातीकरण से नई कुरीतियाँ जैसे- पर्दा प्रथा, जौहर प्रथा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि का प्रचलन तीव्रता से हुआ।

iii) संकर जातियों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुयी।

iv) राजपूतों के विकास ने पुनर्-भारत में एक नवीन क्षेत्रीय राजनीतिक जातिगत श्रेष्ठता सम्बन्धी प्रतिद्वंद्विता को जन्म दिया। इसी क्रम में 'राजपूतों का जन्म' यज्ञकुण्ड की पवित्र अग्नि से हुआ है' जैसे कथन प्रसिद्ध हुए।

v) समाज में वर्ण विभाजन कठोर बना रहा तथा वैश्यों की स्थिति में गिरावट से कहीं-कहीं इनकी शूद्रों के साथ एक जैसा व्यवहार होने के उदाहरण भी मिलते हैं।

निष्कर्षतया: भारतीय जाति व्यवस्था रूढ़िवादी संरचना होते हुए भी समय के साथ विभिन्न विशेषताओं के साथ युक्त होती रही है और इसी वजह से अभी तक अस्तित्वमान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) यद्यपि बौद्ध और जैन धर्म समानपृष्ठभूमि साझा करते थे, इनमें से एक का अस्तित्त्व समाप्त हो गया जबकि दूसरे का बना रहा। परीक्षण कीजिये।

While Buddhism and Jainism shared the same cradle, one disappeared while the other remained. Examine.

बौद्ध & जैन धर्म दोनों की स्थापना तत्कालीन ब्राह्मणवादी धर्म की कर्मकाण्डी प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया के रूप में की गयी थी।

दोनों धर्मों के संस्थापक क्षत्रिय कुल के राजकुमार थे तथा दोनों की स्थापना ब्राह्मणवादी कर्मकाण्डों के विरोध में हुयी थी। साथ ही दोनों अनीश्वरवादी तथा एक हद तक अनात्मवादी थे तथा दोनों ने आचरण की शुद्धता पर भी बल दिया।

किन्तु जैन की अपेक्षा बौद्ध धर्म की लोकप्रियता के अब तक होने को निम्न बिंदुओं में समझ सकते हैं;

i) जैन धर्म के अणुव्रत/महाव्रत जैसे नियम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बौद्ध धर्म के मध्यम मार्ग की अपेक्षा कम व्यवहारिक तथा अधिक कठिन थे।

ii) जैन धर्म की अहिंसा की अवधारणा अत्यव्यवहारिक थी, जिसमें इन्होंने कृषि कर्म तक को निंदनीय बताया।

iii) जैन धर्म अत्यधिक काया क्लेश पर बल देता था जबकि बौद्ध धर्म मध्यम मार्ग पर। फलस्वरूप बौद्ध धर्म की लोक प्रियता बढ़ी।

iv) बौद्ध धर्म को अशोक, कनिष्क, बिम्बिसार, जैसे शासकों का संरक्षण मिला जबकि जैन धर्म को नहीं

v) इसी क्रम में बौद्ध धर्म में बोधिसत्व की अवधारणा, महायान बौद्ध शाखा के उद्भव ने इसकी लोक प्रियता एक नये स्तर पर पहुँचायी।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि राजनीतिक संरक्षण, दर्शन के स्तर पर अधिक व्यवहार्यता ने जैन धर्म के मुकाबले बौद्ध धर्म को लम्बी आयु प्रदान की।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) अलाउद्दीन की बाजार नियमन नीति की संक्षेप में विवेचना कीजिये।

Discuss in brief Alauddin's market regulation policy.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकालीन भारत के सन्दर्भ में अलाउद्दीन खिलजी अपनी सामरिक विजयों की बजाय अपनी बाजार नियमन नीति की वजह से ज्यादा प्रसिद्ध है।

लागू करने की वजह :- i) विश्व विजय का लक्ष्य रखने की वजह से अत्यधिक सेना भर्ती की सैन्य राजकोष पर दबाव ज्यादा न पड़े, इसलिए कीमत नियंत्रण लागू किया।

ii) अलाउद्दीन ने जनता के विकास हेतु इसे लागू किया (कुछ इतिहासकारों के अनुसार)

विशेषताएँ :- i) बाजार नियमन को सफल बनाने हेतु इसने विभिन्न अधिकारियों की जैसे शहना ए मंडी आदि की नियुक्ति की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

निष्कर्ष

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ii) दोआब से भू-राजस्व की वसूली अन्न में की ताकि आपूर्ति बनी रहे

iii) वस्तु-विशेष आधारित बाजारों का निर्माण जैसे- घोड़ा के लिए अलग, अनाज के लिए अलग आदि

iv) बाजार नियंत्रण की कुशलता हेतु विभिन्न बरीद, मुनिहानों की नियुक्ति (गुप्तचर प्रणाली)

v) मूल्य नियंत्रण को कड़ाई से लागू किया उल्लंघन पर जेल/सजा का प्रावधान।

खिलजी की बाजार नियमन व्यवस्था मध्यकालीन भारत में उसे एक अनोखा साम्राज्यवादी स्थापित करती है। जिसकी वजह से घटने मूल्य नियंत्रण लागू कर संतुष्ट सेना की सहायता से भारत विजय को सम्भव बनाया तथा द्वितीय सिकंदर की उपाधि को सार्थक सिद्ध किया।

निष्कर्ष
अद्वितीय
प्रशासनिक

6/8

v. good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) स्थानीय साहित्य को लोकप्रिय बनाते हुए, भक्ति आंदोलन ने संस्कृत के अभिजात्यवाद पर चोट की। विश्लेषण कीजिये। 20

While popularising the vernacular literature, the Bhakti movement dented the elitism of Sanskrit. Analyse. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्ति आन्दोलन की शुरुआत 8वीं - 16 वीं शताब्दी के दौरान मानी जाती है। जिसकी प्रमुख विशेषताएँ मूर्तिपूजा का खण्डन, ईश्वरवाद की पूजा, समानता पर बल, जातिवाद पर चोट आदि थीं।

भक्ति आन्दोलन के तहत तत्कालीन भक्ति संतों ने (जैसे कबीर का बीजक, मीराबाई के पद, नानक की गुरुवाणी, रैदास के भजन, दादू के भक्ति गीत आदि) अपनी समस्त शिक्षाओं को स्थानीय लोगों की समझ आने वाली भाषा में दिया। वस्तुतः उनका मुख्य उद्देश्य की एक आम लोगों में प्रचलित कुरीतियों, निराशा आदि को दूर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करना था। इसी क्रम में उन्होंने लोक साहित्य के निर्माण में स्थानीय बोल चाल की भाषा का प्रयोग किया।

हालांकि उस समय राज्य के स्तर पर सल्तनत संबंधी क्षेत्रों में फारसी तथा राजपूती या अन्य हिन्दू राज्यों में राजनीति के सम्बन्ध में संस्कृत का बोलबाला था। इसलिए भक्ति आन्दोलन की शुरुआत हुई तो स्थानीय भाषा-साहित्य के प्रचार प्रसार से संस्कृत के अभिजात्यवाद को चोट भी पहुँची।

भक्ति आन्दोलन का मूल उद्देश्य ही आडंबरपूर्ण धर्म में सुधार करना, तत्कालीन समाज में मुस्लिम आक्रमणों से व्याप्त निराशा की भावना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को समाप्त करना, मूर्तिपूजा, पर्दाप्रथा, बलिप्रथा आदि कुरीतियों को समाप्त करना था। जबकि इन कुरीतियों को राजनीतिक संरक्षण अभिजात्यवादी वर्ग से मिला था। इसलिए ही जब भक्ति आन्दोलन ने इन कुरीतियों पर चोट की तो उस समय के अभिजात्यवादी वर्ग पर भी चोट हुयी। फिर इसे मीरा के सम्बन्ध में राणा द्वारा इनकी हत्या के प्रयास से या कबीर की हत्या में प्रयासरत सिकंदर लोदी के प्रयास से समझा जा सकता है।

निष्कर्षतः यह कहना उचित है कि भक्ति आन्दोलन संस्कृत भाषा विरोधी नहीं था। वस्तुतः इसने तो स्थानीय साहित्य के अधिक प्रभावशाली संचार के माध्यम बनने की वजह से अपनाया था।

10/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक ने समान प्रतिकूलताओं का सामना किया लेकिन इनसे निपटने के उनके तरीके भिन्न थे। उनके प्रशासन के आलोक में परीक्षण कीजिये। 15

Alauddin Khilji and Muhammad Tughlaq faced similar adversities but dealt with them differently. Examine in light of their administration. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अलाउद्दीन खिलजी तथा मुहम्मद बिन तुगलक दोनों सल्तनतकालीन अनोखे साम्राज्यवादी थे। दोनों ने नवीन योजनाओं को लागू किया किन्तु एक को सफलता मिली और दूसरा "पागल बादशाह" कहलाया।

वस्तुतः तत्कालीन समस्याओं में खिलजी & तुगलक ने निम्न प्रशासनिक समस्याओं का सामना किया :-

i) प्रशासन में धार्मिक तत्वों के हस्तक्षेप से मुक्ति।

ii) 'अमीर-वर्ग' को नियंत्रण में रखना

iii) राजत्व सिद्धांत की व्याख्या तथा सल्तनत के आधार को विस्तृत करना

iv) रांजकोष सुदृढ़ीकरण हेतु विभिन्न

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

योजनाओं का क्रियान्वयन |

खिलजी का प्रशासन :- i) वस्तुतः उसने धार्मिक तत्वों से खुद को पृथक् विलग करते हुए कहा कि "मैं नहीं जानता कि शरीयत में क्या लिखा है, मैं वही करता हूँ जो राज्य के हित में उचित समझता हूँ" |

ii) अमीर-वर्ग को नियंत्रण में रखने हेतु उसने धन के संकेंद्रण को रोका, गुप्तचर व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण किया |

iii) निरंकुश राजतंत्र की स्थापना की तथा सल्तनत की शक्ति का आधार तलवार को बताया |

iv) साम्राज्य विस्तार किया, किन्तु प्रत्यक्ष नियंत्रण कायम नहीं किया | फलतः प्रशासन सम्बन्धी बोझ नहीं बढ़ा |

v) बाजार विनियमन, दाग & हुलिया प्रथा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

आदि के द्वारा प्रशासन में आर्थिक कुशलता तथा पारदर्शिता स्थापित की।

मु० बिन तुगलक की नीतियाँ :- i) खिलजी के साथ समानता स्थापित करते हुए धर्मनिरपेक्ष राज्य प्रशासन स्थापित किया।

ii) अमीर-वर्ग को नियंत्रण में रखने हेतु इनकी आय-व्यय को केन्द्रीय खजाने से दिया तथा वैनिक व्यय एवं प्रशासनिक व्यय अलग-अलग किया।

iii) निरंकुश राजतंत्र यहाँ भी दिखायी देता है किन्तु यहाँ दैवीय शक्ति को इसका स्रोत बताया है।

iv) असफल गुप्तचर व्यवस्था ने प्रशासन पर नियंत्रण को कमजोर किया।

v) साम्राज्यवादी विस्तार के क्रम में अवधि नियंत्रण कायम किया & प्रशासनिक विफलता ने विद्रोहों को जन्म दिया।

इस प्रकार दोनों की समस्यायें अलग थी, अपनाये गये रास्ते अलग थे, परिणाम अलग थे, किन्तु नीयत एक ही थी और वह थी सल्तनत का सुदृढ़ीकरण।।

विद्रोह उत्पन्न करना, समस्या को शामिल करें

6.5/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) बलबन का राजत्व सिद्धांत अलाउद्दीन खिलजी से भिन्न था। विवेचना कीजिये। 15

Balban's Concept of kingship differed from that of Alauddin Khilji. Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बलबन का समय सल्तनत के प्रारम्भिक सुदृढ़ीकरण का काल था जबकि खिलजी का समय सल्तनत के साम्राज्यवादी विस्तार का काल था। इस वजह से न केवल राजत्व सिद्धांत बल्कि प्रशासन संबंधी, स्थापत्य संबंधी, अर्थनीति आदि में भिन्नता दिखायी देती है।

बलबन का राजत्व सिद्धांत :- i) सुल्तान की सत्ता निरंकुश & दैवीय कृपा आधारित बनायी।

ii) राजत्व के सिद्धांत में "रक्त & लौह" की नीति अपनायी।

iii) सल्तनत के सुदृढ़ीकरण के क्रम में साम्राज्यवादी विस्तार को नहीं अपनाया। इसका मानना था कि "जब अपना घर ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सुरक्षित नहीं है तो बाहर आक्रमण मन मूर्छित होगा।

iv) जातीय श्रेष्ठता पर बल देकर खुद को ईरान के कुलीन अफरासियाब वंश से जोड़ा।

v) दरबार में सिजदा, पैबोस जैसी परम्पराओं का प्रचलन कराया।

vi) दरबार में सुल्तान की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने हेतु हँसी, मजाक आदि पर प्रतिबन्ध लगाया तथा स्वयं भी पालन किया।

खिलजी का राजत्व सिद्धान्त :- i) निरंकुश शासन पर बल दिया तथा शक्ति का आधार तलवार को बनाया।

ii) इसी क्रम में धार्मिक तत्वों के हस्तक्षेप को पूरी तरह समाप्त किया।

iii) साम्राज्यवादी विस्तार के क्रम में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विश्व विजय का लक्ष्य रखा तथा लगभग सम्पूर्ण दक्षिण भारत को विजित किया।

(iv) राजत्व सिद्धांत "रक्त & तलवार" की नीति अपनायी।

v) जातीय श्रेष्ठता की जगह पर योग्यता के आधार पर नौकरशाही का निर्माण किया।

vi) दरबार में अनुशासन बनाये रखने हेतु मदिरापान पर प्रतिबन्ध लगाया, अमीरों के आपसी वैवाहिक रिश्तों पर नियंत्रण किया।

इस प्रकार दोनों की राजत्व संबन्धी अवधारणा तत्कालीन समय के अनुरूप थी। वस्तुतः मंगोल आक्रमण से सुरक्षित रखना बलबन की मजबूरी थी तो खिलजी ने इस मजबूरी की कमजोरी का फायदा उठा दक्षिण भारत में अतिक्रमण किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

1

अलाउद्दीन खिलजी के राजत्व सिद्धांत की तुलनात्मक व्याख्या का समय कम है

का तुलनात्मक अध्ययन करना है

प्रभावी उपसंहार दें

8/15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) 800-1200 ईस्वी के दौरान महिलाओं की भूमिका में आमूल-चूल परिवर्तन हुए। टिप्पणी कीजिये।

Role of women underwent cardinal changes during 800-1200 AD. Comment.

उपर्युक्त संदर्भित समय को भारतीय इतिहास में पूर्व मध्यकाल की संज्ञा दी जाती है। वस्तुतः इस काल में नई राजनीतिक प्रवृत्ति (राजपूतों का उदय) हुआ तो नयी आर्थिक व्यवस्था (सामंतवाद के तहत बंद अर्थव्यवस्था) का उदय हुआ।

पूर्व मध्यकाल से पहले महिलाओं को राजनीति, शासन, आदि में भागीदारी मिलती थी तथा इनकी शिक्षा के उचित प्रबन्ध होते थे, तो इसी क्रम में आर्थिक गतिविधियों में भाग लेती थी।

किन्तु पूर्व मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों की बारम्बारता, अर्थव्यवस्था

Copyright – Drishti The Viston Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के पतन, राजपूती मान मर्यादा युक्त जातीय समूह के उद्भव ने, महिलाओं की स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव किये। जैसे कि जौहर प्रथा का प्रचलन, पर्दा प्रथा का प्रचलन। स्त्री क्रय में महिलाओं को घर से बाहर निकलने में बंदिशों का सामना करना पड़ा। अर्थव्यवस्था का गिरता स्तर भी महिलाओं की आर्थिक दुर्व्यवस्था का कारण बना।

अतः स्पष्ट है कि पूर्व-मध्यकालीन सामाजिक, राजनैतिक जड़ता ने महिलाओं की स्थिति को बुरी तरीके से प्रभावित किया तथा इन्हें सामाजिक अनुक्रम में शूद्र & वैश्य के समकक्ष ला खड़ा किया।

निष्कर्ष की समझ
सामाजिक स्तर पर
आर्थिक स्तर पर लेकिन
की चर्चा करें

4/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) दिल्ली सल्तनत काल में व्यापार और वाणिज्य का उदय हुआ। विश्लेषण कीजिये।
Delhi sultanate period saw the rise of trade and commerce. Analyse.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिल्ली सल्तनत काल में इल्बारी काल, खिलजी युग तथा तुगलक काल महत्वपूर्ण है, जिन्होंने सल्तनत में एक हद तक राजनीतिक स्थायित्व कायम किया, जिससे आर्थिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

सल्तनत काल से पूर्व सामंतवादी प्रवृत्ति ने बंद अर्थव्यवस्था का विकास किया, फलस्वरूप आर्थिक गतिविधियों में गिरावट आयी और समाज में वस्तु विनिमय की शुरुआत हुयी।

सल्तनत काल में निम्न कारकों के तहत व्यापार & वाणिज्य के उदय को समझा जा सकता है-

i) राजनीतिक स्थायित्व ने समाज में शांति, कायम की फलतः लोगों ने गैर-कृषि कार्यों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर ध्यान दिया।

ii) एक समान मुद्रा प्रणाली (टंका, जीतल) के विकास ने व्यापार-वाणिज्य को सुलभ किया।

iii) नद्दाफ, धुनिया की खोज ने वस्त्र उद्योग को बढ़ावा दिया।

iv) सिंचाई के क्षेत्र में तुगलक काल की नहर निर्माण व्यवस्था ने खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाया। फलतः खाद्यान्न व्यापार बढ़ा।

v) कारखानों को सरकारी संरक्षण मिला, जिससे शाही वस्तुओं का उत्पादन बढ़ा तथा इनकी आपूर्ति बाहरी बाजार में भी हुयी।

निष्कर्षतया यह कहना उचित होगा कि जो समृद्धि की चकाचौंध मुगल काल में दिखायी देती है, वस्तुतः उसकी शुरुआत सल्तनतकालीन परिस्थितियों में हो चुकी थी।

व्यवस्था में स्थायित्व प्रतिनिधियों के बाह्य तथा आंतरिक प्रतिरोध का व्यापक संघर्ष के बीच की भी भूमिका

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) सल्तनत काल के दौरान वास्तुकला में धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों संरचनाएँ शामिल थीं। परीक्षण कीजिये।

Architecture during Sultanate Period included both religious and secular structures. Examine.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सल्तनतकालीन राजनीतिक व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता इसका धर्मनिष्ठ चरित्र था। जिस वजह से इस काल में होने वाले निर्माण में भी धर्मनिरपेक्ष चरित्रों के साथ धार्मिक अभिव्यक्ति भी दिखायी देती है।

वास्तुकला की शुरुआत में कुतुबुद्दीन ऐबक के बाद इल्तुतमिश ने उसके द्वारा शुरू की गयी धर्मनिरपेक्ष रचना "कुतुबमीनार" प्रमुख है। इसी क्रम में इल्तुतमिश ने धार्मिक रचना 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा तथा मोठ मस्जिद का निर्माण कराया।

इसी क्रम में बलबन का लाल महल, सीरी-ए-किला धर्मनिरपेक्ष

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

रचनाएँ हैं तो खिलजी काल में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित "अलाई दरवाजा भी धर्मनिरपेक्ष चरित्र से युक्त है।

वस्तुतः तुगलक काल में बना तुगलकाबाद का किला धर्मनिरपेक्ष वास्तु है तो उसके सम्मुख बनी मजार धार्मिक संरचना है। लोदी काल में चारबाग शैली से निर्मित संरचनाएँ - पायी जाती है तो धार्मिक चरित्र युक्त विभिन्न मकबरों की भी उपस्थित दिखायी देती है। इसमें इल्तुतमिश द्वारा बनवाया गया नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा 'इस तरह की प्रथम संरचना है।

निष्कर्षतया यह एकदम साफ है कि सल्तनत काल में शासक स्थापत्यकला के सन्दर्भ में धर्म के साथ-2 धर्म निरपेक्ष चरित्र से भी युक्त था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) रजिया इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों में सबसे योग्य थी। परीक्षण कीजिये।

Raziya was the ablest of the successors of Iltutmish. Examine.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रजिया सुल्तान मध्यकालीन सल्तनत साम्राज्य की एक मुस्लिम शासिका थी जिसने लोगों की सहायता से ताज प्राप्त किया था।

इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात अमीरों ने रजिया को सुल्तान न बनाकर रुकनुद्दीन फिरोज को शासक बनाया, जबकि रजिया में निम्न शासकीय गुण थे

i) राजत्व संबंधी आधुनिक सोच का होना तभी ताज प्राप्ति में आम जनता का सहयोग लिया

ii) रजिया योग्य प्रशासक थी। इसी क्रम में अमीरों में संतुलन बनाने हेतु जातीय श्रेष्ठता को त्यागकर मलिक याकूत को अमीर-ए-आखुर बनाया।

iii) इसी क्रम में अमीरों के आपसी मतभेद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बढ़ाकर अपनी सत्ता कायम रखी, जो उसकी कूटनीतिक क्षमता को प्रकट करता है

iv) दूरदर्शी व्यक्तित्व की धनी थी। वस्तुतः जब प्रभावशाली अमीर अल्तूनिया ने विद्रोह किया तो उससे विवाह कर उसे अपने पक्ष में किया।

v) सैनिक क्षमता को प्रदर्शित किये, विभिन्न राजपूत राज्यों के सैनिक विद्रोहों का दमन किया।

vi) सुल्तान की भाँति दरबार लगाया तथा पर्दा छोड़ सामने आकर लोगों की समस्यायें सुनी।

रजिया के सन्दर्भ में मिनहाज सिराज का यह कथन कि "रजिया में सुल्तान बनने के सभी गुण मौजूद थे किन्तु उसका स्त्री होना सबसे बड़ा अवगुण था।" तत्कालीन समय की समस्त परिस्थितियों को स्पष्ट करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 13वीं-14वीं सदी के दौरान विनिर्माण ने अर्थव्यवस्था के विकास को गति प्रदान की। टिप्पणी कीजिये।

Manufacturing gave push to the development of the economy during 13th-14th century. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

13 वीं - 14 वीं सदी में सल्तनतकालीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक गतिविधियों ने बहुआयामी विकास को प्रेरित किया।

इस सन्दर्भ में विनिर्माण प्रक्रिया के महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है:-

i) विभिन्न विनिर्माण प्रक्रियाओं के चलते राज्य के अधीन रोजगार में वृद्धि हुयी।

ii) रोजगार में वृद्धि से लोगों की क्रय शक्ति बढ़ी तो, आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

iii) विनिर्माण में प्रयुक्त सामग्री के खनन, परिवहन में रोजगार की आवश्यक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ना तथा इस प्रक्रिया से अर्थव्यवस्था में वस्तु आपूर्ति बढ़ी। जिसने सन्तत: अर्थव्यवस्था को विकसित किया।

iv) विभिन्न विनिर्माण गतिविधियों के फलस्वरूप नवीन नगर अस्तित्व में आये जैसे- हिसार, आगरा, जौनपुर आदि इससे आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ी।

v) इसी क्रम में विनिर्माण की संगत गतिविधियाँ जैसे - श्रमिकों के खान-पान, रहन-सहन, सजावट हेतु कई वस्तुओं के व्यापार को बढ़ावा मिला। जिसने अन्ततः अर्थव्यवस्था की प्रगति में योगदान दिया।

सल्तनतकालीन आर्थिक गतिविधियों में विनिर्माण गतिविधियाँ कारक व परिणाम दोनों थी। इसी वजह से प्रो० हबीब ने इसे तृतीय नगरीकरण की संज्ञा दी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) मुहम्मद बिन तुगलक अपने समय से परे का शासक था। परीक्षण कीजिये। 20

Muhammad bin Tughlaq was a ruler beyond his times. Examine. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली सल्तनत पर 14 वीं शताब्दी में शासन किया था तथा सल्तनत का सर्वाधिक साम्राज्यवादी विस्तार इसी के काल में हुआ था।

मुहम्मद बिन तुगलक की दूरदर्शिता तथा बुद्धि की विलक्षणता निम्न बिंदुओं से स्पष्ट होती है :-

i) साम्राज्य विस्तार के क्रम में प्रशासनिक कुशलता तथा बेहतर नियंत्रण के लिए राजधानी को देवगिरी स्थानान्तरित किया।

ii) मध्य एशिया में बदलती राजनीतिक परिस्थितियों का फायदा लेने हेतु बड़ी सेना की भर्ती की, किन्तु परिस्थितियों के बदल जाने से सेना भंग की। इस क्रम में अंतर्राष्ट्रीय सोच से युक्त दिखायी देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

iii) साम्राज्य पर पड़ रहे धन के दबाव को कम करने हेतु 'सांकेतिक मुद्रा' का प्रचलन किया। ताकि चाँदी की मात्रा राजकोष में ~~प्रयाप्त~~ पर्याप्त बनी रहे। इस कदम में वह आधुनिक अर्थशास्त्री दिखायी देता है।

iv) इसी प्रकार कृषि ऋण (तकावी) का वितरण किया ताकि कृषि क्षेत्र में विकास किया जा सके। उसका यह कदम भी उसे कल्याणकारी राज्य के वर्तमान स्वरूप से युक्त करता है।

v) अकाल के समय खाद्यान्न उपलब्धता पर्याप्त बनाये रखने हेतु उसने गंगा-यमुना दोआब से भू-राजस्व की वसूली अनाज में करने को बल दिया। अपने इस कदम से वह वर्तमान खाद्य वितरण प्रणाली का प्रणेता नजर आता है, जिसमें

विश्लेषण को और विस्तार दें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सरकारी खरीद द्वारा अनाज भंडार बनाये जाते हैं।

हालांकि इन सभी नवीन उपायों के साथ उसमें तत्कालीन समय की विशेषताएँ जैसे - निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी राजतंत्र, साम्राज्यवादी विस्तार की आकांक्षा आदि भी विद्यमान थी। इसी क्रम में उसने कहा भी "भूमि का एक टुकड़ा भी राज्य के नियंत्रण से बाहर नहीं होना चाहिए"

निष्कर्ष रूप से भले ही तुगलक ने अपने समय से परे जाकर तत्कालीन समस्याओं का समाधान निकाला किन्तु उसका क्रियान्वयन उचित तरीके से न कर पाने के कारण उनका यथोचित प्रभाव नहीं हुआ और इतिहास में उसे "मूर्ख सुल्तान" की भी उपाधि मिली।

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) सल्तनत काल में महिलाओं की दशा पर प्रकाश डालिये। 15
Highlight the conditions of women during the sultanate period. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सल्तनत काल में मुख्यतया: मुस्लिम तथा राजपूत शक्तियों के बीच उत्तर भारत का राजनीतिक विभाजन हुआ था। अत: महिलाओं की स्थिति में इन दोनों के ही योगदान देखे जा सकते हैं।

i) महिलाओं की राजनीतिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। उन्हें शासन संबंधी छूट प्रदान नहीं की गयी थी। हालांकि रजिया सुल्तान एक अपवाद थी।

ii) महिलाओं पर विभिन्न बंधन आरोपित थे, जैसे - बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा-प्रथा, विधवा प्रथा। राजपूती समाज में 'जौहर' प्रथा का भी प्रचलन दिखायी देता है।

iii) महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं थी। वस्तुत: उन्हें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नृत्य, संगीत आदि की शिक्षा दी जाती थी। ताकि दरबार में इसका प्रस्तुतीकरण कर सकें।

iv) महिलाओं के आर्थिक अधिकार पूर्णतया पुरुष पर निर्भर हुए और इसी वजह से बहुविवाह जैसी प्रथायें भी दिखायी पड़ती हैं।

v) श्रम के क्षेत्र में ~~निम्न~~ छोटे स्तर की गांव की महिलाएँ कृषि आदि कार्यों में भाग लेती थीं, किन्तु राज परिवार की महिलाओं की कार्य क्षेत्र में सहभागिता लगभग शून्य थी। फिर चाहे वह प्रशासन हो, नीति निर्माण हो, युद्ध क्षेत्र हो आदि।

vi) सल्तनत काल में महिला सम्बन्धी नकारात्मक विचारों को भक्ति आन्दोलन के इस दोहे से समझ सकते हैं:
"नारी की झाईं पड़त, अंधा होत भुजंग

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कबीरा तिनकी कौन गति, जो नित नारी के संग"

vi) महिलाओं के धार्मिक अधिकारों के सम्बन्ध में उनके मजार आदि पर जाने पर प्रतिबन्ध (फिरोज तुगलक) भी लगाया गया।

vii) समाज में महिलाओं की निम्न स्थिति थी तथा इस स्थिति में सुधार की प्रक्रिया भक्ति आन्दोलन से शुरू होती है जहाँ मीरा जैसे भक्ति संत दिखायी पड़ते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सल्तनत काल की महिलाओं की दशा संतोषजनक नहीं थी। जबकि इस काल की आर्थिक प्रगति बहुत उच्च थी अतः कई बार व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारक उसकी आर्थिक परिस्थितियां न होकर राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक विचार होते हैं।

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) सल्तनत काल के दौरान चित्रकला आकारहीन प्रभावों के साथ अभी भी प्रारंभिक चरण में थी। परीक्षण कीजिये। 15

Paintings during the time of Sultanate were still in formative phase with amorphous influences. Examine. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सल्तनत काल में हुयी आर्थिक प्रगति तथा राजनीतिक स्थायित्व ने समाज में कला सम्बन्धी मूल्यों को प्रसारित किया जिसमें स्थापत्य कला, चित्रकला, संगीत आदि प्रमुख थे।

वस्तुतः सल्तनत काल में चित्रकला सम्बन्धी मूल्यों का विकास उतना नहीं हुआ, जितना स्थापत्य कला का हुआ। इसके पीछे ~~वजह~~ वजह ये मानी जाती है कि तत्कालीन शासक इस्लाम आदि से अपने सम्बन्ध खराब नहीं करना चाहते थे और इस्लाम में जीवित चीजों की चित्रकारी करना मना है। फलतः शासकों ने कला के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अन्य रूपों को प्रश्रय दिया।

इसी क्रम में चित्रकला संबंधी ऐतिहासिक प्रणाली, जो भारत में विद्यमान थी, इसमें मन्दिर / गुफा आदि पर भित्ति चित्रकारी की जाती थी। जबकि सल्तनत काल में इस दौरान चीनीयों चीनियों से कागज निर्माण की तकनीक प्राप्त हुयी। फलस्वरूप चित्रकला के आधुनिक स्वरूप की शुरुआत हुयी। यही वजह है कि उस दौरान चित्रकला कागज पर प्रयोग (परीक्षण के दौर से ज्यादा गुजरी और अपने प्रारंभिक दौर में विद्यमान रही।

साथ ही साथ चित्रकला सम्बन्धी (कागज पर) रंगों के प्रयोग सम्बन्धी ज्ञान का अभाव, ब्रश की उपयुक्तता सम्बन्धी परेशानियाँ तो साथ ही स्थापत्य कला के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मुकाबले दीर्घ स्थायी न होने की आशंका ने, इसके धीमे विकास को समझने में सहायता की।

हालांकि सल्तनत कालीन शासक स्थापत्य एवं संगीत आदि में रुचि रखते थे, किन्तु चित्रकला के क्षेत्र में भी उन्होंने प्रयोगों को जारी रखा और अपने काल में चित्रकला (कागज पर) की प्रारंभिक अवस्था को घोषित करने में सहायता प्रदान की।

इस प्रकार सल्तनतकालीन चित्रकला की प्रारंभिक अवस्था समय के साथ मुगल काल में पहुँचकर अकबर एवं जहाँगीर के संरक्षण में मध्यकालीन चरम स्तर को छूती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (a) शंकराचार्य के दर्शन और हिंदू धर्म पर इसके प्रभाव के बारे में विस्तार से बताइये। 20

Elaborate on the philosophy of Shankaracharya and its impact on Hinduism. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शंकराचार्य की दर्शन अद्वैत वेदांत पर आधारित था, जिसमें इन्होंने जीव & ब्रह्म की एक सत्ता की व्याख्या करते हुए तत्कालीन समाज में सुधार लाने का प्रयास किया।

शंकराचार्य के दर्शन की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

i) ब्रह्म & जीव की एकता पर बल दिया। इसीलिए इनका दर्शन अद्वैत कहलाया।

ii) बौद्ध धर्म से मिलते-जुलते (शून्यवाद शाखा) सिद्धांतों के कारण इन्हें 'प्रच्छन्न बौद्ध' की उपाधि भी दी गयी।

iii) समाज में व्याप्त बहुदेववाद & आडंबरों पर प्रहार किया तथा एक ब्रह्म को परम सत्य बता ज्ञानमार्ग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की मुक्ति का रास्ता बताया।

iv) ज्ञान के बल पर आत्मा के ऊपर अज्ञानता का आवरण हटेगा तथा ब्रह्म से उसका एकीकरण होगा।

v) इसी क्रम में भारत के 4 कोनों में श्रृंगेरी, द्वारका, पुरी, ~~[illegible]~~ जोशीमठ में आध्यात्मिक केंद्रों की स्थापना की।

शंकर के अद्वैत दर्शन के हिन्दु धर्म पर निम्नलिखित प्रभाव देखे जा सकते हैं:-

i) समाज में कर्म-काण्डों को छोड़कर लोगों में ज्ञानमार्ग का स्थान बढ़ा।

ii) भविष्य के विभिन्न संप्रदायों यथा द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद आदि की स्थापना हेतु आधार उपलब्ध कराया।

iii) समाज में विदेशी आक्रमण तथा भारतीय संस्कृति के पतन को सहारा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देकर सुधार/भक्ति आन्दोलन की शुरुआत की जिसकी चरम अभिव्यक्ति सल्तनत काल में दिखायी देती है।

(iv) ज्ञान मार्ग की शाखा पर बल देने से भक्ति मार्ग संबंधी कुरीतियों से जनमानस मुक्त हुआ तथा हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान हुआ।

(v) ब्रह्म & जीव के एक होने की बात से विभिन्न भेदकारी (वर्णभेद, जातिभेद etc) मान्यताओं पर चोट पहुंची।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शंकर का दर्शन भारतीय भक्ति परंपरा में एक शुरुआती लहर थी जिसने तालाब में अन्य लहरों के प्रकटीकरण को प्रोत्साहित किया तथा सम्पूर्ण भारतीय समाज रूपी तालाब में हलचल मचा दी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) दिल्ली सल्तनत ने उपमहाद्वीप में नई साहित्यिक परंपराओं की शुरुआत की। टिप्पणी कीजिये। 15

Delhi Sultanate introduced new literary traditions into the sub continent. Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

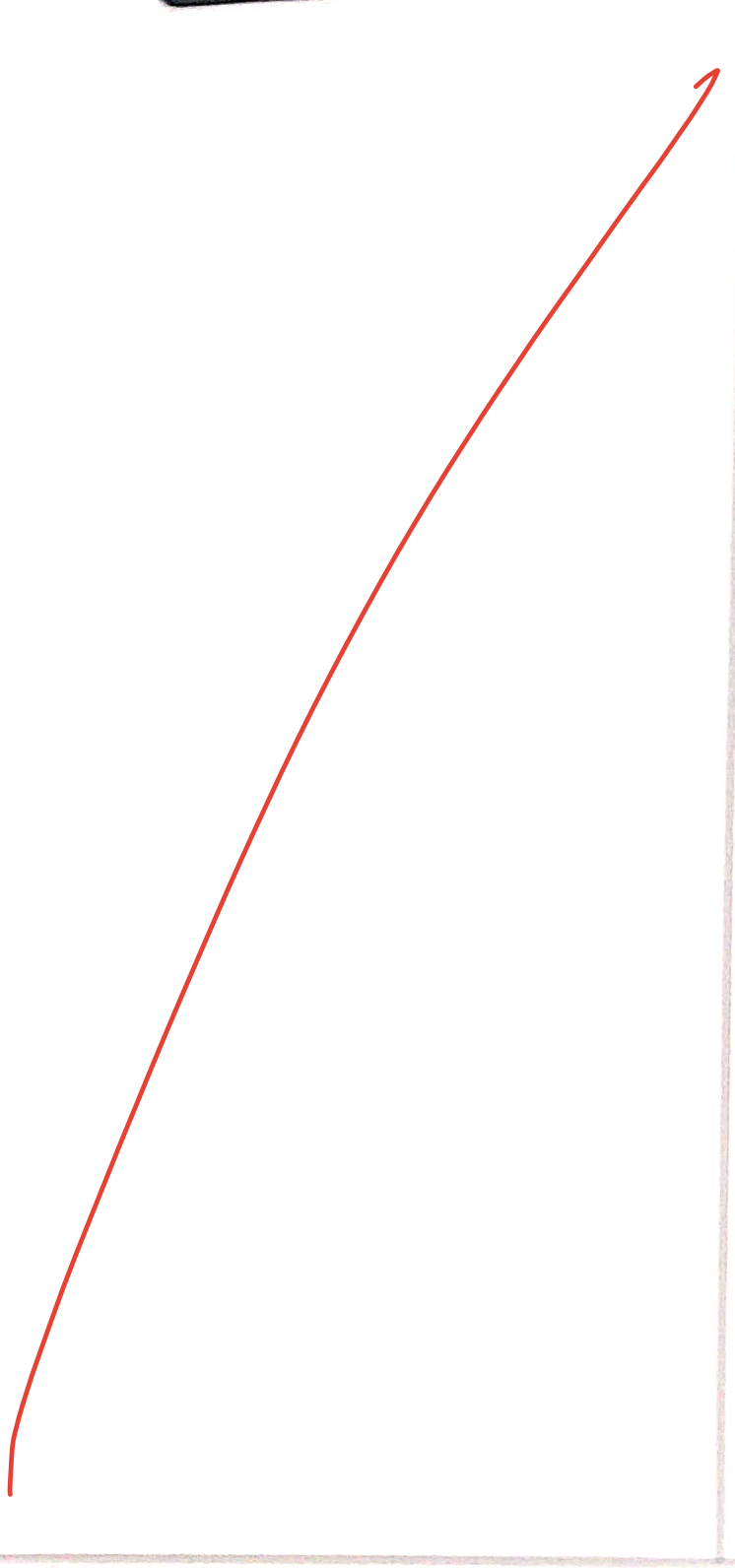

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) दक्षिण भारत में चोल काल भव्य वास्तुशिल्प प्रस्तुतियों का साक्षी बना। टिप्पणी कीजिये। 15

The period of the imperial Cholas in South India witnessed grand Chola architectural productions. Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्षिण भारत में 9वीं सदी से लेकर 11वीं सदी तक चोल काल के तहत एक समृद्ध राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विरासत की उपस्थिति देखी जा सकती है।

चोल काल में राजराज चोल का श्री लंका पर आधिपत्य, राजेन्द्र चोल का गंगा अभियान, मलाया आदि की विजय ने चोल साम्राज्य को शिखर पर पहुँचाया। इस राजनीतिक तथा आर्थिक सर्वोच्चता ने कला के क्षेत्र में निम्न विकास किये :-

i) चोल कालीन स्थापत्य कला में मंदिर निर्माण की द्रविड़ शैली परिलक्षित होती है। जिनमें विशाल गोपुरम, पिरामिड के आकार का शिखर आदि प्रमुख विशेषताएँ हैं। जैसे- गंगैकोंडचोलपुरम का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बृहदेश्वर मंदिर।

ii) इसी क्रम में मंदिर निर्माण में भगवान विष्णु के मंदिरों की उपस्थिति भी देखी जा सकती है, साथ ही में विभिन्न जैन, बौद्ध, शिव मन्दिरों का भी निर्माण हुआ।

iii) चोल कालीन स्थापत्य की प्रशंसा में यह कथन कि 'चोल वास्तुकार राक्षस की तरह सोचते हैं और जौहरी की तरह तराशते हैं" उसकी भव्यता, विशालता तथा कला की सूक्ष्म पहचान को प्रदर्शित करता है। जैसे- तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर

iv) चोलकालीन स्थापत्य में मन्दिर के शिखर पर विभिन्न देवी, देवताओं, यक्षों आदि की मूर्तियों की भी उपस्थिति देखी जा सकती है। साथ सुन्दरता एवं भव्यता हेतु इन शिखरों को काफी ऊँचा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Context
प्रासंगिक
है।
चोल वास्तुकला
निर्माण परम्परा
वास्तुशिल्प बिन्दुओं
की चर्चा करें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बनाया जाता था।

v) मंदिर की दीवारों व छतों पर चित्रकारी के द्वारा सजावट का कार्य भी किया जाता था, जो चोलकालीन स्थापत्य को भव्यता का एक नया प्रदान करता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि चोलकालीन स्थापत्य कला द्रविड़ शैली के तहत बनाये गये अनूठे उदाहरण हैं जो अपनी सूक्ष्म कारीगरी तथा भव्य व विशाल सोच के लिए आज भी वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हैं।

इन्टीग्रेट चोल शासक तथा उनके द्वारा बनाए गए, मंदिर स्थापत्य की चर्चा करें

7/15

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation